CC-14- Revolution and Revolutionary thoughts

Unit-V (Gandhian Ideology) Part-1

For P.G.Sem-3

सामान्य परिचय

- जन्म -2 अक्टूबर 1869।
- काठियावाड़ के 'पोरबंदर' नामक स्थान पर।
- दादा 'उत्तमचंद गांधी' पोरबंदर रियासत के दीवान थे।
- पिता- करमचंद गांधी।इसी पद को प्राप्त किये।
- 12 वर्ष में गांधी राजकोट के अल्फ्रेड हाई स्कूल में दाखिला लिये।
- 1888 ई. में उच्च शिक्षा हेतु लंदन गए। वहां दादा भाई नौरोजी के संरक्षण में रहे। वकालत की शिक्षा प्राप्त कर 1891 ई. में राजकोट वापस आए।
- 1893 ई. में 'अब्दुल्ला एंड कंपनी' के निमंत्रण पर गांधी जी 'दक्षिण अफ्रीका' गए। वहां भारतीयों के साथ रंगभेद नीति से दुखी होकर गोरी सरकार के विरुद्ध सत्याग्रह का सफल प्रयोग किया ।अपने 20 वर्ष के दक्षिण अफ्रीका प्रवास के दौरान गांधी जी ने रंगभेद के खिलाफ लड़ाई जारी रखी। गांधी जी के प्रयासों से ही वहां की गोरी सरकार ने भारतीयों के खिलाफ बनाए काले कानून को 1914 में रद्द कर दिया।1915 में वे वापस भारत आए तथा 'गोखले' को अपना राजनीतिक गुरु बनाया। इनके प्रभाव में आकर ही गांधी जी ने अपने को भारत की सक्रिय राजनीति से जोड़ा।
- 1916 में गांधी जी ने अहमदाबाद के करीब 'साबरमती आश्रम' की स्थापना की और अप्रैल 1917 में बिहार में स्थित चंपारण के किसानों पर किए जा रहे अत्याचार के खिलाफ आंदोलन चलाया।
- 1918 में गुजरात के खेड़ा जिले में '**कर नहीं दो**' आंदोलन का नेतृत्व किया।

- 1918 में गांधी जी ने अहमदाबाद के मिल मजदूरों की वेतन वृद्धि के लिए आमरण अनशन किया। अनशन के चौथे दिन ही सरकार मजदूरों की मांग मांगने के लिए विवश हो गई।
- अपनी राजनीति के प्रारंभिक दिनों में गांधी जी ने ब्रिटिश सरकार के संवैधानिक सुधारों की प्रशंसा की पर 1919 के जलियांवाला कांड के बाद गांधी जी का पूरा दृष्टिकोण सरकार के संदर्भ में बदल गया।
- गांधी जी ने 1919 में खिलाफत आंदोलन का नेतृत्व किया। 1920- 22 तक असहयोग आंदोलन चलाया। 1920 में 'यंग इंडिया' एवं 'नवजीवन' समाचार पत्रों की स्थापना की। 1924 के बेलगांव में हुए कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता की।
- 1930 में गांधी जी ने 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' के अंतर्गत 79 अनुयायियों के साथ नमक कानून तोड़ने के लिए दांडी समुद्र तट की यात्रा आरंभ की।
- नवंबर 1931 में गांधी जी ने लंदन में द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में कांग्रेस का नेतृत्व किया।
- 8 अगस्त 1942 को गांधी जी ने ऐतिहासिक अंग्रेजों 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव को कांग्रेस से पास करवाया जिसमें उन्होंने 'करो या मरो' का नारा दिया।
- 30 अगस्त 1948 को दिल्ली की प्रार्थना सभा में 'नाथूराम गोडसे' नामक एक हत्यारे ने गांधी जी की गोली मारकर हत्या कर दी।
- गांधी जी ने रचनात्मक कार्यों को भी काफी महत्व दिया। इन्होंने 'ग्राम उद्योग संघ' तालीमी संघ, गो रक्षा संघ की स्थापना की। इन्होंने लघु एवं कुटीर उद्योगों को भारी उद्योगों से अधिक महत्व दिया। 'खादी' को इन्होंने अपने कार्यक्रम का मुख्य हिस्सा बनाया। गांधी जी समाज में फैली हुई

कुरीतियों एवं असमानताओं के प्रति जीवन भर संघर्षरत रहे। इन्होंने अछूतों को 'हरिजन' की संज्ञा दी।

<u>गांधी दर्शन की पृष्ठभूमि</u>

- गांधी दर्शन का उद्भव मूलत:धर्म की पृष्ठभूमि में हुआ। उनकी यह मान्यता थी कि जीवन के हर क्रियाकलाप में धर्म को स्थान दिया जाना चाहिए। सर्व धर्म समभाव के पुजारी गांधी जी पर अनेक धर्मों का प्रभाव पड़ा था।
- वे हिंदू धर्म ग्रंथो में रामायण, महाभारत, श्रीमद्भागवत गीता से काफी प्रभावित थे। वे 'रामायण' को भक्ति का सर्वोत्तम साहित्य तथा 'गीता' को आध्यात्मिक ग्रंथ मानते थे।
- पतंजलि के योग सूत्र के पांच यमों से भी उन्होंने अहिंसा की शिक्षा ग्रहण की।
- 'वेदांत दर्शन' का भी उन पर प्रभाव पड़ा जिसका सार यह है कि संसार को त्याग दिया जाना चाहिए अथवा उसे भगवान के उपहार स्वरूप ग्रहण किया जाना चाहिए।
- गांधी जी बौद्ध एवं जैन धर्म से भी प्रभावित थे ।जैन धर्म के सत्य, अहिंसा अस्तेय ,अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य ने उनको बड़ा प्रभावित किया।
- बाइबल से उन्होंने बुराई को अच्छाई से जीतने तथा अपने शत्रुओं को भी प्यार देने की शिक्षा ग्रहण की।
- इस्लाम धर्म से उन्होंने 'एकेश्वरवाद' एवं भाईचारा' का संदेश ग्रहण किया।
- गांधी जी चीनी दार्शनिक लाओत्से और कन्फ्यूशियस से भी प्रभावित थे। उन्होंने 'लाओत्से' के निरहयं भाव (non-assertiveness) की शिक्षा ग्रहण की जिसमें कहा गया है कि जो मेरे प्रति अच्छे हैं मैं उनके लिए अच्छा हूं जो मेरे प्रति अच्छे नहीं है उनके प्रति भी मैं अच्छा हूं।

- ‘कन्फ्यूशियस’ से उन्होंने साहस, धैर्य एवं सद्भावना की शिक्षा ग्रहण की।
- गांधी जी के धर्मनिरपेक्षता संबंधी विचारों में थोरी, रस्किन और टॉलस्टॉय के विचारों ने प्रभावित किया।
- राजनीतिक चिंतन में ‘थोरी’ का प्रत्यक्ष प्रभाव गांधी जी की के सविनय अवज्ञा और करबंदी आंदोलन पर पड़ा। गांधी जी पर थोरी के निबंध *Essay on Civil Disobedience* का बड़ा प्रभाव था।वे उनके इस विचार से पूर्णतः सहमत थे कि जनहित करने वाले सभी व्यक्तियों तथा संस्थाओं के साथ अधिकतम सहयोग किया जाना चाहिए और यदि वह अहित कर तो असहयोग किया जाना चाहिए।
- गांधी जी ने रस्किन की पुस्तक *Unto the last* और *Crown of wild olives* से ‘शारीरिक श्रम’ का आदर करना सीखा।
- टॉलस्टॉय की पुस्तक *The kingdom of God is within you* ने अहिंसा के विषय में गांधीजी की शंकाओं को दूर कर उन्हें पक्का अहिंसावादी बनाया गांधी जी ने अहिंसा को मन- वचन- कर्म तीनों से स्वीकार किया।

To be continued.....

Arun Kumar Rai
Asst.Professor
P.G. Dept.of History
Maharaja College,Ara.